

प्रतिमाओं के साँचे में दलित विमर्श

डॉ. अरविन्द कुमार
डॉ. मुंकेश कुमार शुक्ल



प्रकाशक :

मनीष प्रकाशन

प्लॉट नं०-26, रोहित नगर कालोनी,

बी० एच० यू०, वाराणसी-5

दूरभाष : 0542-2310682

Email : kalaprakashanvns@yahoo.in

© संपादक द्वय द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रस्तुत पुस्तक में दिये गये सभी तथ्य लेखक के हैं, प्रकाशक का इससे कोई सम्बन्ध नहीं है। विवाद की स्थिति में लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा।

डॉ. अरविन्द कुमार

डॉ. मुंक्केश कुमर शुक्ल

प्रथम संस्करण : 2016

ISBN : 978-93-85789-04-5

मूल्य : 900.00 रुपये

कम्प्यूटर अक्षर संरचना :

मनीष कम्प्यूटर मीडिया

प्लॉट नं०-26, रोहित नगर कालोनी,

बी० एच० यू०, वाराणसी-5

दूरभाष : 0542-2310682

मुद्रक :

महावीर प्रेस

भेलूपुर, वाराणसी

13. दलित 'स्त्री' : कछु करुण कथा चलाई डॉ. प्रीति विश्वकर्मा		125-137
14. दलित समाज में महिलाओं की भूमिका डॉ. मंजू कुमारी		138-151
15. दोहरा अभिशाप : दलित स्त्री की व्यथा-कथा डॉ. अमित कुमार पाण्डेय		152-164
16. शिल्पियों का दलित विमर्श डॉ. अर्चना गौड़		165-173
17. छोटा उदयपुर की राठवा जनजाति : एक अवलोकन डॉ. मधुलिका		174-187
18. जनजाति अस्मिता : कला व साहित्यिक प्रतिरोध विपुल तिवारी		188-194
19. हासिए का समाज और अधिकार पक्ष : डॉ. भीमराव अम्बेडकर नंदी पटोदिया		195-200
20. दलित विमर्श डॉ. भीमराव अम्बेडकर के परिप्रेक्ष्य में डॉ. राकेश कुमार गुप्ता		201-212
21. साहित्य और समतामूलक समाज के निर्माण में डॉ. अम्बेडकर की भूमिका सर्वेश कुमार		213-220
22. स्थापित व्यवस्था की अस्वीकारता का स्वर अम्बेडकरवादी चेतना भरत कुमार वर्मा		221-227
23. दलित समाज का शैक्षिक विकास ध्रीति तिवारी		228-238
24. भारत में दलितों का सामाजिक अंतरण डॉ. प्रमोद चतुर्वेदी		239-245
25. दलितों के विकास में पंचायती राज की भूमिका डॉ. नरेन्द्र प्रताप गुप्ता		246-264
26. खुले में खड़ा पेड़ : धूप, वर्षा अब छाँव डॉ. अरविन्द कुमार		265-288



हासिए का समाज और अधिकार पक्ष :

डॉ. भीमराव अम्बेडकर

★ नंदी पटोदिया

21वीं सदी डॉ. भीमराव अम्बेडकर की सदी कही जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगा। क्योंकि अम्बेडकर समाज सुधारक के साथ-साथ राष्ट्र भक्त भी थे। भारतीय समाज का उत्थान ही उनका मुख्य लक्ष्य था। भारतीय समाज में सभी वर्गों के लोग रहते हैं, उनका मानना था कि समाज के निचले तबके के व्यक्ति का विकास ही राष्ट्र का विकास है। प्रत्येक व्यक्ति समाज की महत्वपूर्ण कड़ी है और उसका चहुमुखी विकास सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और शैक्षणिक विकास जरूरी है। जिस समस्या के समाधान के लिए समतामूलक समाज का निर्माण करना चाह रहे थे। वह समस्या 21 वीं सदी में भी बनी हुई है— जैसे छूआछूत, ऊँच-नीच, भेदभाव, अमीरी-गरीबी जो हमारे राष्ट्र को उच्च शिखर की अपेक्षा खाई की तरफ धकेल रही थी, उसी समस्या का निराकरण वे अपने समय में करना चाह रहे थे। लेकिन संभवतः वह समस्या इक्कीसवीं सदी में खूब देखने को मिलती है, यही कारण है कि इक्कीसवीं सदी में डॉ. भीमराव अम्बेडकर प्रासंगिक है।

भारतीय समाज में एक वर्ग दलित समाज का है, जो अतीतकाल से हिंदू समाज के द्वारा अपमानित, प्रताड़ित, ऊँच-नीच, भेदभाव का शिकार होता हुआ चला आ रहा है, इसी समाज में जन्में डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने दलित समाज को इस गुलामी से मुक्ति का रास्ता, शिक्षा के माध्यम से ढूँढ़ निकाला। अम्बेडकर का मूल सिद्धांत था, शिक्षित हो, संगठित हो और संघर्ष करो। डॉ. अशोक मरले के शब्दों में—डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर ने श्रमिक, निर्धन, मजदूर, स्त्री, आदिवासी, बंगारा तथा सर्वाहारा आदि सभी के विकास का सपना देखा है। उपेक्षित एवं वंचित जीवन जीने वाले को विकास के मुख्य प्रवाह में लाने हेतु उन्होंने किये संघर्ष

★ असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर, मध्यप्रदेश